

॥ वामयाद ॥ ॐ ईं स ४०० आनाथयाद ॥ ददईयायी ॥ ॐ ईं स
४०० वीजीर्वायाद ॥ वामईयायी ॥ ॐ ईं स ४०० दयनाथयाद
॥ ददईयायी ॥ ॐ ईं स ४०० मिनीर्वा ॥ वामाया ॥ ॐ ईं स ४०० अद्विमा
नाथयाद ॥ ददईयायी ॥ ॐ ईं स ४०० अतिर्वायाद ॥ वामयायी ॥
ॐ ईं स ४०० लूकदवनाथयाद ॥ ददईयायी ॥ ॐ ईं स ४०० लूनाथवाः
याद ॥ वामकन ॥ ॐ ईं स ४०० कांगनाथयाद ॥ ददईयायी ॥ ॐ ईं स
४०० नावनीर्वायाद ॥ वामवायी ॥ ॐ ईं स ४०० आयनानन्दनाथया

ॐ ह्रीं स ४ डी क नाली वाया द ॥ वाम ह्रीं (४) ॥ ॐ ह्रीं
स ४ जूं जूं मू न नाथ या द ॥ क क दि ॥ ॐ ह्रीं स ४ क न नू जूं वाया द ॥
द दि ॥ ॐ त्रि यामला ह्रीं क न्या स ४ ॥ ॐ त्रि षा द ॥ ॥ यून ४ जूं धा व मू
ल विद्या क न व कूं ड न्या स ४ ॥ ॥ मालिनी न्या स ॥ त्रिं ज न ना दि न्यः
मिखा यां या दू की ॥ त्रिं ज थ य स न्ये डु ड्व मि न माला यां या दू की ॥ त्रिं ज अ
नि व र्त्त यूर्व मि न माला यां या दू की ॥ त्रिं ज अ य नि षा ये द द्वि षा मि न
माला यां या दू की ॥ त्रिं ज ७ वि षा ये ड रु व मि न माला यां या दू की ॥ त्रिं ज

ॐ नमो यन्त्रिमणित्रामालायां पादुकां । नैजवचामुद्येति नीयः
नरपादुका । नैजध्वयि दानि नरद्वयपादुका । नैजलनावाय
ल्ले कर्णद्वयपादुका । नैजउमाहने दक्षिणकर्णरूप । नैजदुः
यह्नायेवामकर्णरूप । नैजवृं गुरुहृन्नासायूटद्व
यपादुका । नैजववजि ल्ले वकुपादुका । नैजककं दायदं द्वा द्वयपादु
का । नैजखकालिकाये दुर्द्धदशनयं को । नैजगजवाये जू (क्ष) दशनयं
को । नैजद्ययावाये दुर्द्धिषयादुका । नैजठवीवाये जू (क्ष) षयादुका । नै

ॐ माया दये जिह्वा या दू की ॥ नं १ अवा (गर्व) या वा या या दू की ॥
 नं २ वसिखा वाहि (स्य) कं (०) या दू की ॥ नं ३ र ही स (स्य) दक्षिण वा दू निखन
 नं ४ य वा यू व ग य वाम वा दू निखन ॥ नं ५ उ ला मा ये दक्षिण वा दू द (ॐ)
 नं ६ ट वि ना य के वाम वा दू (ॐ) या ॥ नं ७ ० यू लू मा ये कल न ल द्य या दू की ॥
 नं ८ म म क्का वि (स्य) दक्षिण रुक् क नी गु लि षू ॥ नं ९ ७ कु द्ध (स्य) वाम रुक् क नी
 गु ली षू ॥ नं १० व दी यि (स्य) पू ल द लु दक्षिण रुक् या दू की ॥ नं ११ ज य हे नि पू लाः
 य दक्षिण रुक् ॥ नं १२ क या लि ने क या ल वाम रुक् ॥ नं १३ य या व ने रु दि म

ध्रुवा दूकी ॥ नं० १ ह्रस्विका ये या हा ध्रुवा दूकी ॥ नं० २ ससर्वात्मन दक्षि
 हा या ॥ नं० ३ अ० ४ वृ० ५ नि० कि० वा मया ॥ नं० ६ च० ७ ग० ८ द० ९ दक्षि० हा सु० न ॥
 नं० १० ल० ११ न० १२ ना० १३ ये० १४ वा० १५ म० १६ सु० न० १७ या० १८ दूकी ॥ नं० १९ अ० २० मा० २१ हो० २२ य० २३ य० २४ द० २५ य० २६ नं० २७ म० २८ म्मा० २९ द
 र्श० ३० ड० ३१ द० ३२ न० ३३ या० ३४ दूकी ॥ नं० ३५ द० ३६ स० ३७ हा० ३८ वि० ३९ ना० ४० रि० ४१ म० ४२ ध्रु० ४३ नं० ४४ म० ४५ म० ४६ हा० ४७ का० ४८ लो० ४९ नि० ५० त० ५१ भू० ५२
 नं० ५३ अ० ५४ ग० ५५ क० ५६ सू० ५७ मा० ५८ यू० ५९ ध्रु० ६० ये० ६१ गु० ६२ ऋ० ६३ या० ६४ दूकी ॥ नं० ६५ अ० ६६ अ० ६७ उ० ६८ का० ६९ द० ७० वो० ७१ रु० ७२ क० ७३ या० ७४ दूकी ॥ नं० ७५ अ० ७६ न
 ता० ७७ ना० ७८ द० ७९ वो० ८० ड० ८१ नू० ८२ द० ८३ य० ८४ नं० ८५ अ० ८६ न० ८७ ह्रस्वो० ८८ द० ८९ दक्षि० ९० हा० ९१ जानो० ९२ या० ९३ दूकी ॥ नं० ९४ अ० ९५ नं० ९६ कि० ९७ या० ९८ ये० ९९ वा
 म० १०० जा० १०१ नू० १०२ नि० १०३ या० १०४ दूकी ॥ नं० १०५ अ० १०६ डा० १०७ ग० १०८ य० १०९ णो० ११० द० १११ दक्षि० ११२ हा० ११३ ऊ० ११४ या० ११५ यी० ११६ नं० ११७ अ० ११८ अ० ११९ वि० १२० वा० १२१ म० १२२ ऊ०

द्यायी ॥ नैं अ द ह न्ये द क्रि ह वाम या द या दू की ॥ नैं अ रू रू का त्रि (स्ये) वाम या
 द या दू की ॥ नैं अ नू यी मालिनी न्या स द वी या दू की ॥ ॐ ति मालिनी न्या स ॥
 ॥ ॥ न द ना ही ॥ नैं अ अ ग्री क ल ल ला ट या दू की ॥ नैं अ अ अ न न म लु ल व
 कू या दू की ॥ नैं अ ॐ सू की ण द क्रि ह न न या दू की ॥ नैं अ ॐ नि गू रू वाम न न
 या दू की ॥ नैं अ उ अ म ग्री ण द क्रि ह क लू या दू की ॥ नैं अ उ अ यी ण वाम क लू या
 दू की ॥ नैं अ अ नि थी ण द क्रि ना ण यू ट या दू की ॥ नैं अ अ रा व रू नी वाम ना ण यू
 ट ॥ नैं अ ॐ क ल द क्रि ह ग लु या दू की ॥ नैं अ ॐ रु व वाम ग लु या दू की ॥ नैं

[illegible]

[illegible]

[illegible]

४॥ अस्माकं यत् ॥ **॥ नमि अस्माकं नमः ॥** ॥ नैजं ह्येति द्वाये याद द्यथ यादू
 कां ॥ नैजं ह्येति मद्वाये जानू द्यथ यादू कां ॥ नैजं ह्येति विद्युत्वाये उन्नू द्यथ यादू कां
 ॥ नैजं ह्येति लोको यय यादू कां ॥ नैजं ह्येति दीकाये नाशो यादू कां ॥ नैजं ह्येति मालिनी द्य
 द्यथ यादू कां ॥ नैजं ह्येति निवाये कल यादू कां ॥ नैजं ह्येति वसू मुखाय मुख यादू कां ॥
 नैजं ह्येति नामा म्वाये नासा यूट द्यथ यादू कां ॥ नैजं ह्येति कटकाये कर्ण द्यथ यादू कां
 ॥ नैजं ह्येति रुक्मिणी यादू कां ॥ नैजं ह्येति मुख निनसि यादू कां ॥ **॥ नमि द्वा द्यथ ॥**
नमः ॥ ॥ नैजं ह्येति सर्वज्ञ ताद द्यथ यादू कां ॥ नैजं ह्येति अमृत नमजा मालिनी हः

किंलिजसुखाह॥ नं० १ सु० अ० व० दा० व० दि० नी० अ० ना० दि० वा० ध० नि० खा० ये० वो० ष० ट॥ नं० १
सु० व० जि० धी० व० क० ध० ना० ये० स्व० न० कु० क० व० चा० य० दू०॥ नं० १ सु० ना० भा० नि० त्य० अ० लू० के० ण० कि०
स० रु० स० न० जा० न्वि० न० न० गु० या० य० व० ष० ट॥ नं० १ सु० ४ न० म० सु० र्यं० अ० न० न्द० ण० कि० नि० ली०
दू० म० हा० या० शु० य० ना० म्हा० य० स० रु० षा० दा० य० दू० रु० ट॥ नृ० नि० ख० उ० ग० या० स० ॥ नं० १
हं० अ० न० न० क० य० नि० द्वा० द० द० य० या० दू० का०॥ नं० १ हं० का० ल० य० नि० यु० लू० द्वे० य० या० दू० का०॥ नं०
अ० हिं० नू० द० य० नि० जं० या० द० य० या० दू० का०॥ नं० १ हं० अ० ष० य० नि० ड० नू० द० य० या० दू० का०॥ नं० १
दू० वा० म० य० नि० क० टि० द० य० या० दू० का०॥ नं० १ दू० का० म० य० नि० लि० ग० स्या० य० या० दू० का०॥

नै० अ० दै० पि० यु० नि० म० ध० स्म० न० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० व० क० य० नि० व० क० स्म० न० या० दू० का० ॥
 नै० अ० दै० स० र्य० य० नि० न० रा० य० ध० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० स० म० य० नि० न० रा० य० दू० का० ॥ नै० अ० दै०
 य० न० य० नि० ड० द० य० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० जी० व० य० नि० द० द० य० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० वि० मू०
 य० नि० क० ल० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० बू० द० य० नि० ग० लो० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० वी० श्व० य० य० नि०
 गि० न० स्म० न० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै० स० दा० ल० व० य० नि० मू० द्वि० स्म० न० या० दू० का० ॥ नै० अ० दै०
न्या० स० ॥ ॥ नै० अ० दै० वा० गी० श्व० र्य० लू० न० ल० ग० ग० ल० क० श० ग० ग० र्ग० ग० मि० नी० ग० ग० ल० क० अ०
 मृ० ग० स० च० वि० ली० ग० ग० न० न० द० द० व० ग० ग० ल० म्वा० च० गु० ॥ अ० विल० द० का० ठि० सि० द्व० च० गु० ॥ अ०

बिलककाठियागिनीयादूकां॥ **हम** **ध**॥ नें ७ मायायेसुं नलखर्मलाकश
गगर्गुगमिनीस्वर्गलाकअमृतसंचाविहीस्वर्गनिन्ददेवस्वर्गमावती॥
लककाठिसिद्धवती॥ लककाठियागिनीयादूकां॥ **द** **वि**॥ नें ७ माहनेयुं न
लखवनलाकशगगर्गुगमिनीयवनलाकअमृतसंचाविहीयवनानंद
दवयवनाम्बा॥ लककाठिसिद्धया॥ लककाठियागिनीयादूकां॥ **न**
रि॥ नें ७ कानायेसुं नलमर्त्यलाकशगगर्गुगमिनीमर्त्यलाकअमृतसंचा
विहीमर्त्यनिंददेवमर्त्याम्बा॥ लककाठिसिद्धअमृतलककाठियागिनीयादू

[illegible]

यस्वाहा॥ ॐ क्रीं (ग) क न व र्ण य वा नि च र्च नू ह दे व र त स मा ना य स्वाहा॥ ॐ क्रीं
अ नू या गी त अ च क नि न अ न य न व क्त अ म भा वि च र त ना य स्वाहा॥ ॥ ॐ न
४ पू र्वे षा ण वृ द्धि द ह ध म धि का न जा य त्व य न स्र म्भ श्च व स्म स्र म न सा वा चा क
म णि रु द्रा णां य श्च मू द न ह नि भ य त् स्म रं य दू कं य त्क रं त त्स र्व व क्ता र्यः
हं र व नु स्वाहा॥ ॐ नि म कृ ण म्भ दू गी र्दे त्वा व द्धि या ग्व त्सं यू अ नू ना नि त्रि क
सि द्ध र्थं द दामि स द्य नं नि लं॥ ॐ क्रीं सा मं क नू २ स्वाहा॥ ॐ ति ति ले क मा दू
नि दू त्वा॥ ॐ स ह सा च्चि म ह नं आ न म स्त व दू नू य धृ क्॥ स र्व नि भ स र्व ग तः

५
यावकायनभास्त्रुन॥ त्वं मोदधात्रकर्मात्रधात्रहा त्वं नभास्त्रुन॥ विष्णु त्वं
लाकयालासि॥ भक्तिमनुष्ययच्छम॥ विधिवत्तुयहृस्वाय॥ ॥ नादियाच्छु
लाङ्गायुविद्याय॥ ॥ **विषययद्रूद्रूद्रया॥** यागज्ञाननित्यदवाञ्जनं॥ यू
र्वेद्यानादि॥ दिक्कल॥ भर्जनं धूर्चवत्॥ कल॥ यमिषा॥ दणवलिविचक॥ अ
दूनि॥ **यजमानयमिषा॥** ॥ **हानायमिषा॥** ॥ **आदूनि॥ ७४॥** तुं जां जां दू
आचार्यमनुसिद्धिप्रमुखाहा॥ ॥ **यालोवक्त्रकयालमूदालिगलकलमू**
नात्रवत्सुर्वागवत्तुमात्रहालधवनादवाहिमालाधुनं॥ विष्णुचूलय

सालभाधनरु.रुथानिर्हृगयः४यायादयनयावसानसमय.कायाः
लिकाऽकन॥ ॥यूननाकुनि॥५४॥यनिस्त्रिनासिदवसि.सूयनिष्कार
वखियं॥सान्निधंयनियशन.यजमानायिवृद्धय।गंनानुद्वियदनित्यं.गं
नानाज्ञास्तथेवच॥यजमानसरुह्यायं.सयूययलुवान्धवं॥नक्षत्रुसर्व
दवग.दशनरेनवनभासुन॥सूयनिष्कारनदारवनु॥ ॥आचार्ययूज
॥गनिकयोष्टिक॥यवक्षान्यादि॥पूर्ववट्.युनदीयवहिका॥गनिकीय
ननिदेयादि॥ॐ ह्रः स्वाहा॥ॐ रुवः स्वाहा॥ॐ ह्रः स्वाहा॥आचार्यदक्षि

क्षान्तं ॥ वाचनं ॥ वलिरुचरं ॥ दधवलि द्रुवा यिखा क्वाय ॥ संवयाम
 न ॥ ॐ खूं या ए य स्वाहा ॥ ॐ खूं या ए य स्वाहा ॥ ॐ खूं अ या ए य स्वाहा ॥ ॐ
 खूं दाना य स्वाहा ॥ ॐ खूं वा ना य स्वाहा ॥ ॐ खूं समा ना य स्वाहा ॥ ॥ अ
 सुहाय विगु माचनी ॥ वक्रा या ना यू ल या न दक्षि ए वि य माल सा ॥ ॥ मूल
 मनु ए आ दू नि ॥ १०८ ॥ यू ल ॥ ए र वा ए मू खं क्वा ॥ अ सं सा ॥ ए की न के ए
 नी चो द ॥ वक्रा य ए नी वि स र्ज नी अ सु हा ॥ ए नी ना रि य र्क ॥ दु का रं वा यू वी र्ज न
 दू य वि व नू र्ण ॥ वक्र या नि न दू र्ज ॥ कालं व लू नि यू की न दू य वि य न मं व द्धि वा

ॐ सं हं सं । ॐ न्दं वि न्दं ल यानं सि न क म ल व नं क्षी य क्ष ना य व नं द द्वा वृ ठ
कु नि त्यं द ह नि कू ल म लं म नू तु ल्यं हि या यं ॥ ॥ व क्ता भा व नं ॥ ॥ अ क या न
न उ य य म न क ॥ य न य न न श दू या न ॥ अ क्ता ना स य नि बा धि य क्ता
म ह ल य दं ख दि न म र्थ ला रा य अ या मा र्ग न व दू य न कं ॥ स मी स म य न
या यं ॥ रा ग्य म धू दू म्ब वि ॥ अ न्व स्तु र्ध र व क्ता मं द र्वा आ यू य व द्वा नं ॥ क
न द य वि र्वा जी व व ट आ यू य व द्वा नं ॥ आ य नि य अ क ल्या नं यू य य न ध नाः
नि च ॥ र व ता गु नू य सा द न स र्व का र्ज सि धि दं ॥ अ ग्नि स दू य ॥ ॥

२०
१
सुयमयर्षी॥ कवचन॥ ॥ नैजखुं सकवद्विगाविहृक्लृष्टलनिह
मनुकवचायदू॥ ॥ धनामानसा॥ अवहथस्त्रानयाचक॥ ॥ ग्रवान
रुमनिलककाय॥ अग्निकालसकाय॥ कवचमनु॥ ॥ नैजखुं सकव
द्विगाविहृक्लृष्टलनिहमनुकवचायदू॥ ॥ धमनय॥ अवखव
वाहास नूगवसनयचसायाठसनय॥ यजमानसकलनचक॥
॥ ॥ वलिविहृक्लृष्टनयाय॥ ॥ सखहामयाय॥ ॥ मनु॥ ॥ तुंकांवांवां
वुंअग्नयखाहा॥ ३॥ ॥ दृतादूनि३॥ ॥ नकवीहि नकचुतद्वय॥ ॥

धवक सचाठ सुलिद्यन अग्नि संरा कलूय ॥ ॥ अनिधा वाक्
काया वधन क का अग्नि संरा कलूय ॥ ॥ आचार्य नवका सिका
या व अग्नि संदय ॥ ॐ कृताय कर्म लेखा हा ॥ ॐ अकृताय कर्म
लेखा हा ॥ ॥ अग्निय ना नाम्बूल दाय ॥ ॥ निवा वधन का काय ॥
॥ ॥ अर्थ या जो द क न कृणु विना मय ॥ ॥ ३ ॥ अ (ध) मुख कृत्वा ॥ ॐ कं
गच्छ गच्छ सूत्र प्रष्ट आत्मा संसा न वाहन य नव काल य द वा न न
कृद्गता मन ॥ ॥ धव ॥ अग्नि आनी वीद ॥ ॥ अथ कुमाला चन ॥ ॥

स्नानादि। लंखनहाय। दुकारं वायूवीजं गद्यविचित्रं वक्ष्यामि
 गद्यं कालं वक्ष्यामि युकं गद्यविचित्रं वक्ष्यामि सहस्रं। नन्दवि
 न्दलया नीतिनकमलवर्चको वक्ष्यामि वक्ष्यामि वक्ष्यामि दृष्ट्वा कुरुमिह दृष्ट्वा
 कलमर्चं मयूख्यं हियायं ॥ **॥ वक्ष्यामि ॥** श्रीखलुचन्दनं दिव्यं गीष्मं सु
 मनाह्वयं। आरुषिर्गललाटाक्षी चन्दनं यतिगुणं ॥ चन्दनं लपि
 र्गयूष्यं यविर्गयायनाशनं। आयदाह्वयनिर्गलक्ष्मीनाम्नसुख
 यदं ॥ **॥ सिद्धं ॥** वीजं वक्ष्यामि महावीजं वीजं वक्ष्यामि वक्ष्यामि वक्ष्यामि

ला का कर्मणी दवी. सिन्दूरान्न मूल मी. ॥ **जुद्धवाच** ॥ वसुः
यविर्ग यत्र मी. सुखसो राग्य दा यकी. कायासि कं जग न्मात्र. वसु
गृह न मा मुन ॥ ॥ **दक्षि** ॥ स्वर्ग मर्त्य कया ताल. चतुर्दश यद्वर्ग
की. दिव्य चक्षु रू ला श्रुर्थ. दक्षि कं यति गृह्णी ॥ ॥ **कर्तृ यनाका** ॥
पुष्टि सिन्दूर व वल्गु रा. यनाका कर्तृ संरु की ॥ गृहान यत्र मसान् च
तु काली सुभा रनी ॥ ॥ **यंचयठाका** ॥ कर्तृर्थ यूगलं दवि. यनाका
यंच वल्गु की ॥ यंच सिद्धि रू ला श्रुर्थ. गृहा ल ध्वज मूल मी ॥ ॥ **जुद्ध**

न॥ अ० क० अ० क० या० का० म० ध० र्म० का० मा० र्थ० सिद्धि० दं० ॥ ॐ श्रीं नमो वन्द
 हो० य० व० च० य० वां ग० नि॥ ॥ **ऊ० उ० म० का०** ॥ य० ह्ना० य० वी० नं० य० व० मं० य० वि
 र्णं० य० जा० य० न० र्थ० त्म० रु० उ० य० व० स्ता० न० ॥ अ० य० म० म० यं० य० नि० म० प्र० मु० नं० य०
 ह्ना० य० वी० नं० य० ल० म० मु० नं० य० ॥ ॥ **व० रु० मा० उ०** ॥ कृ० र्णं० चि० क्ता० म० लि० दि० वी०
 यु० र्णं० च० न्द० नि० र्णं० सि० र्णं० ॥ न० न० द० ल० न० द० व० ॥ द० हि० म० वि० नि० र्णं० रु० ली॥ ॥
ह० न० ॥ ना० ना० य० य० सु० ग० न्ध० यी० म० ल० नी० क० सु० मा० द० यी० ॥ सो० रा० य० सिद्धि० दं०
 रु० दं० य० य० वा० रु० न० मू० रु० मं॥ ॥ **वि० न० त्वा० न० म० मं०** ॥ ॐ० आ० त्म० न० त्वा० य०

स्वाहा॥ श्रीविद्यानवाय स्वाहा॥ दू निवनवाय स्वाहा॥ श्रीदू सर्वन
वाय स्वाहा॥ ॥ ~~सूर्याय~~ अथादि॥ वाक्॥ मानव॥ गण॥ यजमानस्य
प्रीतिजयस्य मन्त्रदववर्मन॥ श्रीप्रीतिस्वस्त्यदवनायानिकाः
मनयानवगुरुयववर्गयतिस्त्रिनिमित्ता॥ धनसिद्धिनिजयूनादूनिः
यदू॥ कोमालीयागवर्ग॥ यूजानिमित्ता॥ धन॥ कर्तु॥ कूल॥ मा॥ कूलुम
हा॥ श्ववाय॥ अर्थ॥ नम॥ यूस्य॥ नम॥ ॥ व॥ न॥ वि॥ ज॥ मू॥ इ॥ त॥ स्या
यविनिर्वनसुत॥ अदिमध्ववग॥ न॥ अ॥ नि॥ य॥ वि॥ स॥ वि॥ न॥ व॥ म॥

नादिपितृकृत्वा सावित्रा चैव मूद्व प्रत् । नमः कूट वन ४ । लक्ष्मी महा
 मारुते लुहे नव ॥ **अथ नमः ॥** यूर्य नमः ॥ वृं । श्री महा मारुते लुहे नवाय
 नमः ॥ **गुन नमः** कान । नंदो यो कुं वी क्को ॥ अखलु मलु लाका
 नं चार्थ अनच नच न । नत्य दं दजे नं अन नस्मे यी गुन वन नमः ॥
 गुन वृक्षा गुन वृक्षु गुन वृक्ष मरु वृक्ष । गुन वृक्ष जगत् सर्वं नस्मे
 यी गुन वन नमः ॥ यत्र नमः गुन वृक्षान नमः ॥ यत्र नमः श्री गुन वृक्षान नमः ॥ यत्र
 माचार्य गुन वृक्षान नमः ॥ **वलि ॥** यद्मासना यथादूकी ॥ **यवव**

कूर्मासनाय यादुकीं ॥ या **विष्णु कनविकनदी** ॥ किलिशवित्रका
काक्षयेक ॥ **अक्रा यरुट** ॥ वज्र मूढया मुखवष्टनी ॥ नंजं नंदू
ट वज्रयं जयखाहा ॥ **दश दानयनी** ॥ नंजं चलमकूलै कूलमच
ले को कुं रुट्खाहा ॥ ॥ **याम** ॥ किलिशवित्रका काक्षयेक ॥ **अक्रा**
यरुट् यादुकीं ॥ कनसाधन ४ ॥ नमारुगवनिद्वक् मलाये कोपी
अंरुषाया यादुकीं ॥ **कुं कूडिका** ये कूल दीयाये कोपी नऊनी यादुकीं
॥ **को को कुं वव्व** नगर खडू पी मध्व माया यादुकीं ॥ **घा न** अथा नअथा

नाम्नी वदू नू या ये देयी अनामिका र्या या दू कां ॥ चों चों मरुता
 वि का ये कोणी कनिषा र्या या दू कां ॥ कि हि २ वि च का क ल ये दू ४णी
 क न न व य सा र्या या दू कां ॥ ०० नि क न न्या स ४ ॥ ॥ न मा रु ग व नि रु
 ल म ला ये गी ड ड व का ये या दू कां ॥ ५० कू ड्डी का ये कू ल दी या ये यी यू
 व व का ये या दू कां ॥ ५० कां दौ दू व व न नि खणी द दि ष व का ये या
 दू कां ॥ ५० न अ या न अ या नाम्नी वदू नू या ये गी ड ड न व का ये या
 दू कां ॥ चों चों मरुता वि का ये य नि म व का ये या दू कां ॥ कि हि २ वि

वका कृष्णये श्री यंत्राय नमः वका ये यादूकां ॥ **ॐ नमो वक्रनास ॥** ॥
नमो रगवती दत्त मला ये कां ददया ये यादूकां ॥ **ॐ कूडिका ये**
कूल दीया ये कां निवभ्रमहाहा ॥ कां कां दू वर्व वलि खे दू गी निखा ये
वोषट् ॥ धा नमू धा नमू धा नामू खी वदू नू या ये के कव चा य दू ॥ **ॐ**
ॐ मरुता वि का ये कां नमू या ये वमट् ॥ कि वि श वि च वा कृष्ण ये ज
॥ **ॐ नमो नमनास ॥** ॥ **ॐ जलया नमू या ॥** जल या नास
ना ये यादूकां ॥ **ॐ ॐ** ~~ॐ ॐ~~ आनन्द ग कि रे न वानन्द वी वा मिः

यतय मू॥ धीजलयागरुदाविकायेयादूकी॥ कौं ददयायनम॥
 कौंमि मू॥ नसखाहा॥ कूँ लिखायवोमठ॥ कूँ कवचायदू॥ कौं न
 रुगया यवमठ॥ क० अ० मू० यरुठ॥ आवाहननह्यायनचन्य
नाकनयूर्यनम॥ (धनू मू० डी दर्ल यत॥ मयजिअरिअचनी॥ नं
 अ कूडि कायेविमरु कूलदीयायेवीमहि तन्ना कूडि यचा दयात॥
 ॥ अ० यियागयूजा॥ अ० यियाग सनाययादूकी॥ नं अ० कौं कौं कूँ क०
 पसू २ धा २ ननतनू २ नूयचठ २ यचठ २ करु २ वम २ दम २

द्या न अ२ विद्या न अ२ विधि २ दूँ ३ रुट् काशी महा को मात्रिका वि अ
 या दू काँ । नं० १ ॥ आनन्द ग किरे न वानन्द यी महा विद्या या अ
 ध्वनी दूँ यी नूँ ॥ द्ययाण रुट् विकाशे या दू काँ ॥ म० १ ॥ आ वा
 हुना ॥ दि ॥ ॥ यानि मूर्खा दन यन ॥ ॥ रत गुद्धि ॥ कच्छ य
 मूर्खा व ॥ ॥ नं० १ ॥ दूँ को दूँ यी को नं ॥ ॥ आस यू जा ॥ नं० वन्द
 न या दू काँ ॥ ॥ जी अ कर्त या दू काँ ॥ ॥ विवरु सम या दू काँ ॥ ॥ दूँ सर्व जन भा
 हुनी या दू काँ ॥ ॥ श्री नाना कृष्ण लं काल यूर्य या दू काँ ॥ ॥ नं० १ ॥

आनन्दः किं नवानन्दवीचाधियतयधुं। आत्मनयूष्यादुकी
॥ नैवसौयादुकी ॥ विन्दुय ॥ ॐ निआत्म युजा ॥ ॥ आवाहन
॥ श्रीसंवलीमलुलान्के। केमयदसाहिना। नंदः किं सूरामासु
ष्टन्यायचदुर्क। अकनकलगतं यचकश्चनयषद्व। चत्वात्रायच
कान्यं यूनप्रयिचदुर्क। सुखनामलुलदं सैष्टष्टयनतस्मै नमः
गुनवर्चश्चववक्षीकजनी ॥ ॥ शिववयूजा ॥ अननासनाययादु
की ॥ जमयूनासनाययादुकी ॥ जमूनासनाययादुकी ॥ नैज (धुपे)

[illegible]

[illegible]

वलि॥ ॥ महाकाल॥ ॐ नमः महाकालमहादेव वायसव
नमः यमथनाय यादुकी॥ वलि॥ ॥ डग चली॥ ॐ नमः वायसव
ॐ डग चली वियमदनी दूरे सदा नमः २ त्वीमी ई स ४ मय
ह नयादुकी॥ ॥ वलि॥ ॥ डग चली॥ ॐ नमः वायसव
चली वियमदनी दूरे सदा नमः २ त्वीमी ई स ४ मय
यादुकी॥ वलि॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मी॥ ॐ नमः दूरे हारे नमः ४
वलि॥ ॥ काली॥ ॐ नमः सिद्धिक वलि नमः ४ नमः ४ वलि

स्वाहा१

॥ ॥ विष्णुनामं स्तौतुं श्रीं वक्रवर्कं डाडिया नमहा यी ॥ १० ॥
 श्रीनिन्दनाथमिर्क ॥ श्रीमहाविष्णुसूक्तं श्रीदत्तवैद्यनः
 क्रात्मना किं यादूकां ॥ ॥ धर्मवानि ॥ ॥ अक्षवर्णकथन
 म॥ ॥ अननासनाय नमः ॥ कंदासनासनाय नमः ॥ नासा
 नाय नमः ॥ यनासनाय नमः ॥ कलासासनाय नमः ॥ क
 लिकासासनाय नमः ॥ यनासनाय नमः ॥ ॥
 ॥ ॥ मयूलासनाय नमः ॥ ॥ अथ ध्यानं ॥ कोमात्रीयन

मातृयी, नीललाहि नमजसा। उठाइठध विदवी, अन्यचाइ
यलविना॥१॥ विशालवदना देवा, यूल्चन्द निशानना। सोः
मयश्रकृलुल दिची, दकि। एचयलविना॥२॥ द्विरुजा कामरागि
न्या, दोचकं वलमलुनो। मधका मासु गखमी, समुत्तनयया धवा
॥३॥ दकि। एचगदा दिवा, नाना वलविहमिता। वामाह्यङ्ग गनं द
वा, वालमादाय। एरुनं॥४॥ वामाचयनिता जंघा, ददया दानना
यिया। मयूनवाहना देवी, सर्वाह्यसी कवीयना॥५॥ कौकामात्री

मूलेश्वरानन्दनमः॥ **ॐ नमः** ॥ ॥ **विद्यापूरुषो** ॥ नंज चं चं
 ऊँ मं ऊँ काँ काँ कूँ कूँ दूँ दूँ मूँ मूँ ॥ काँ मरुको मालिका विचनीया
 दूकाँ ॥ ३ ॥ **वसि** ॥ ॥ गयनी ॥ नंज कूलको मावि वि
 द्मरु मरुका द्यस्यधी ॥ मरुतन्ना को लिख वा दयात् ॥ **व**
सि ॥ नंज काँ मालिका विचनीया दूकाँ ॥ **वसि** ॥ काँ ददयाय नमः ॥
 काँ निवस्य हार ॥ कूँ निखाय वोषट् ॥ के कवचाय दूँ ॥ काँ नग
 रयाय वषट् ॥ क ४ सर्वाङ्ग पूजाय हट् ॥ ॥ **अवाहनादि** ॥ या

[illegible]

अथा अथा नामूची चों चों किलि श्वि चया दूकी ॥ वलि ॥ अरु ग व
 निसिद्धि काँ काँ काँ कडि कडि काँ काँ काँ खल गिं था न अथा नामूची
 चों किलि ॥ १ ॥ श्वि चया दूकी ॥ वलि ॥ ॥ अहं सा सनाय
 या दूकी ॥ अ वसा सनाय या दूकी ॥ अ मयूना सनाय या दूकी ॥ अ
 गनूठा सनाय या दूकी ॥ अ महिमा सनाय या दूकी ॥ अ गजा स
 नाय या दूकी ॥ अ धना सनाय या दूकी ॥ अ नवा सनाय या दूकी
 ॥ ॥ अ वक्रायनी अ सितांगरे ववा यया दूकी ॥ काँ माहू ववनी

नूतुरे नवाययादूकी ॥ चंको माविचलुरे नवाययादूकी ॥
ठं वेवुवी कांनरे नवाययादूकी ॥ नं वावाहिडनलुरे नवाय
यादूकी ॥ यं वून्दायली कयाली नरे नवसहिनाययादूकी ॥ यं
चामूलुशी वनरे नवाययादूकी ॥ नं महालकी संहानरे नः
वाययादूकी ॥ नमः श्रीं श्रीं वलुवायये नमः श्रीं श्रीं यादूकी ॥ श्री
नूदचलु देवी यादूकी ॥ श्री यचदाये यादूकी ॥ श्री वलुवायये नमः
यादूकी ॥ श्री वलुनायी काये यादूकी ॥ श्री वलुये यादूकी ॥ श्री वलु

वलि न धून क॥ ॥ जे काँ की काँ ४ कय पा ला य
वलि गृह २ खा हा॥ यी की कल यू व दू क ना थ य वलि गृह २ खा
हा॥ गंगी गूंग ४ गंगी कल ग (लव ना य वलि गृह २ खा हा॥ दू
महा कन वी न म म ना थ य वलि गृह २ खा हा॥ दू गी सिद्धि वा
मूळ य वलि गृह २ खा हा॥ आ का हा वा वि नि स व (न र्था वलि
गृह २ खा हा॥ सर्व र्था रु न र्था सर्व र्था पि न च र्था सर्व र्था ०० छु द
व ना र्था वलि गृह २ खा हा॥ आ वा रु ना दि॥ या नि नि नि र्था मू डी॥ ॥

धूय ॥ दिव्यगन्धसमायुक्तं सर्वद्वयप्रिया नूरु ॥ आद्यय ॥ सर्वद्वयः
 वानां धूयार्थं यन्निगृह्णतां ॥ धूयाह्वयमूरुगवनं विश्वनूयामहं ॥
 वा ॥ धूयनामननद्वयं योयनां यनमस्य वा ॥ ॥ **दीर्घ** ॥ सुखका ॥ म
 हागजः ॥ सर्वद्वयनिमिवायुहं ॥ सवा आर्यनूनं आति दीयार्थं यन्नि
 गृह्णतां ॥ ॥ **नेत्र** ॥ अनीमहा नमदीर्घं नमो ॥ अदि ॥ समन्वन्वि
 तं ॥ मयानिवदिनं रुक्मा ॥ गृहाह्वयनमस्य वा ॥ नेत्रार्थं गृह्णतां नवि
 रुक्मिभञ्जलाकून ॥ अयमूरु नमदीर्घं यननवयवागति ॥ ॥

[illegible]

पुनर्वर्णनवर्णनीकूजर्ण॥ ॥ वन्द्यसदासकलकोलिकमालः
 हर्णः कथञ्चनननकयात्रकदम्बमाला। खट्वागखट्वाट्टककाय
 रुसं दानवहर्णः विपुवनधनवल्लराया॥ ॥ शीसासनवट्टकनाथः
 त्रियसिद्धः स्कन्दः सुगतिगद्यकाननधूसकः॥ ॥ गौरीसूतः किमुकलि
 नांदधनः यायासः नकावसनः नखिवारुनानः॥ ॥ सिन्दूरसायुमक
 मूर्ध्निननककूभा। निजिद्युनाद्यनयथाधनदहलका। विजल्ल
 नवनभादकसादकसूतयायासनागद्यतिः सकलाथदान॥ ॥

न कामवर्चकलिनयिङ्गजटाकलायं कालावलीजटिलदधुधन
यचर्षु। सुखादयात्वनककांचलः॥ (गोत्रं) (गोत्री) सुनं वदुक
नाथमहं नमामि ॥ ॥ रुका वंखाददृष्टं हामितरुवश्यं सर्व
विद्यानकार्यं गंगायूं (गं) यत्तु (ङ्ग) गगघगतिगत सिद्धिस्वार्थदा
यं। (कुं) गूं मूडागजाखगस्यवनगत आख्यानेकदक (कुं) जां
कीर्णं हांगं ग (घ) (घ) द्वि नमूषग (घ) विद्यना (थ) नमस्क ॥ ॥ रुका
नान्त्ययादाहसकमलकुजावादनः क्षितिङ्ग वायूयाद्याः

[illegible]

यद्यत्र प्रीययागदिक्षण। यूकाद्वाविंशका। ए. वसमसहस्रव
जलं। गस्तु न किं साक्षात्विंशतिरुदा ४५ कमयद सहिता ४ यानुदाः
विंशतवत् ४॥ ॥ स्वप्नं वा मनसि सिद्धिं यत्र यत्र विनोदं स्वगतिं ला
चनं वा। ए. मुक्तं रुचिं यत्र वलियत्रिजयं सुमुनं सर्वविद्यां ॥
दार्ढ्यं यत्र कवित्वं निधिनं सयुति कां याद का काम सिद्धिं सर्वाः
चिन्तां ददकं अलियमि न न ना रुचं वना नू न का ४॥ ॥ ॥ ॥ माः
न का जिन ना सु न रुचं न मिता मरु मा न न ग मा वि म्वा वा च नू

नशा यथु गन्ध दाना भस्वला नल (भा) रा ठवा (झ) च्व सु (भा) रु वः
 नव नव व कू सु भव च्व न कं रा न सा मयी कू डि का स्वा वि न न तुः
 नव सा ह्ना न दि यो द्य भा द्यं ॥ ॥ व न्व क यू नि सु न्द नां वि न य नां
 सिं हा सि नां सु न्द नां सर्व सा मि रु सर्व रा रु रु न ही यु ज्ञां व ना रु वि
 नां य सा ह्ना द हा या लिय द्म वि म ला वा य रु ला र्थ य दां ना म्ब न्द म हि
 सा सु न य म थ नां तु म्ब य नां ना म्ब रुं ॥ ॥ का का १ ४ क स मा न १ ४ क
 द रु न ४ का य ४ का वि थ मु ना क व क्का क ज ना द न ४ क ग न हि ४ क न्द

४ कदवा सूना। कल्या ना न रुटी न टय मूदि न ४ श्री सिद्धि था (ग ४४)
न ४ की जना ट क नाय का विजय न दवा महा रु न व ४ ॥ महाः
कालं महा जोदं महा रु न न प रं । स्कूल नूयं महा कार्य क
हे काया लक्ष विर्षी न स्व रु ट क ध न द व । नि न रं कल न प रं । न
मं रु मू महा कालं । रु स रान का न कं ॥ ॥ मार्क (७) या वि य दू य
द रु ना नू य रु या व ता न । स्व क य स य चूर्ण क न (७) व रु वि रु रु क
ल्य ४ द रु रु द य मूदि न सू न सा रु रु ग रु य रु व ४ सा य द रु रु व

दुर्गवर्गाऽयश्चतुकाया ॥ ॥ यादवीमधूकेटरुयमथनी
 याचलुमूळुद्धिनीयामाशामहिषासूत्रक्षयकनीयानकवीजा
 गुया।यासागुरुनिगुमुदेत्यदलनीयादवदवाग्रयासादवीम
 मनक्षदंदिष्टुजेऽथलीजयानक्षु ॥ ॥ डरूलाभूजकार्त्तिक
 यत्रिगताशीसिद्धिलक्षा ४ यनाकयूत्ररूटिकेन्दुकून्दधवलानि
 ४ (गवयाऽभयदा।सीसात्रार्त्तवदू४खयंकदहनानिष्कम्यनीसर्व
 दा।मीमत्यश्चमूखाम्बुजादल।गुजायनस्तिनायागुव ४ ॥ ॥ आसा

यूनिवर्सिटीयहानिनिजगद्दृष्टो कविदावनी कृसादावतवेविमा
नविमदासैसात्रमाहाविही। (प्रयत्नात्रनिकात्र। (सूत्रवत्रया
नायसंवाविही। त्वांसयाविलगहूलं सरूलदासिद्विलक्षानः
म४॥ ॥ यासानककानि कूरुनाहिरगशस्यत्रया सामाकवक्रिगिय
(थादत्रमक्षसंस्मा। विञ्चनचिरुविषयास्यविलीनरावास्यारावः
राविमयत्रायुहमामिकाली॥ ॥ नन्दस्येवरासनस्यदधताम
(धललाटयरासौ कौकानिमनूयू। गेविदगिजस्यातन्वतीसर्वे

४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

कलाचनी नकवस्तयनी धना सिंदूरान्नूयमाहिता। बहुर्जुजा
शक्तिः पूगश्च सिद्धियाश्च धनं गुरुं कामार्जयनमंशकि मयूलवः
नवाहिनी नकयूषलनान्दवी नकमांसावभासिनि कावायुः
अमराक्षं वटवृक्षनिवासिनी याम्ययी (०) स्तिगानिह्यं कोमा
नीचनमासुत ॥ ॥ रुंसीयूर्वाधिकालि अन्नूयननिराकाल
वाणीरुवाणी मुने कृत्तिकाका नवश्च कधियासिद्धिलक्ष्मीयवा
ख्या। शासानाख्यायवाख्या शिबुवनजननी नाजनाजं धनीत्वं च

का न क नू या शि उ व न ज न ना नो मि ठ वां कू मा नी ॥ आ का व को
 कू मा नी क रु क रु कि म खिल क कि या ना नू या ॥ ग मू डा सी खा दि च क
 कू नू २ स रु न गी म न गु च व ७ न जा ख सि धि ना ॥ थ म न य व न च न गी
 व आ हू न धा न ॥ ए का न वा शि म ध र व उ व मू ग न रु द क रु न म
 ध ॥ ॥ त्व म सि य न म का ली सि धि ल श्री त्व भ व त्व म सि य
 न म च ली ड य च ली त्व भ व ॥ त्व म सि य न म वा हू नी ना ज ना ज ध्व
 नी त्व ॥ स क ल नि रु न ग र्क स च सि धि द्वा तु ॥ ना न्यं व दा मि न

विनामिनचिक्यामि. नान्यं स्म त्रामिनरुजामिनचाय या
मि। एह्वात्वदीयचत्रहम्वुजना न्यद्वमा नः स्वहृतिद्वय
याममदहिसिद्धिं ॥ ॥ यथेवानयहानार्थं कवचं रुवधुवान
र्हं नद्वद्वविष्णानां अनिर्हवधुवानर्हं। स्वस्मान्कृणयालाय. व
क्मात्मदि. अरिनांगमहाह्ववसहिताय. गधवद्वक्यागिनीक्ष
यालायसाक्षायसगलस्यविवावायविगुविदिगिन्त्यादिला कया
लायसूत्रावाववद्वह्वं यजमानस्यसगलस्यविवावाह्वं आयूवा

ब्राह्ममेव च जनधनलक्ष्मीसंगतिर्मानववृद्धिप्रदुःखथापना
 करुणवलदायनारुर्वंशुः॥ अन्यथावर्षनामिहभवद्वर्ष
 ममागमात्कावृष्यशवनत्रक्षत्रक्षयत्रभक्ष्यत्री॥ ॥ विन्दुदिय
 ३॥ ॥ दक्षिण॥ ॥ चूययूजा॥ अमुमकुनलखनचूयसल॥ च
 न॥ सिधत्रनकून॥ खानन॥ वलिस्त्रानकन॥ ॥ व्यास॥ च॥ अमु
 यरुट्॥ कत्र॥ धन॥ ॥ ४॥ च॥ कनिष्ठायां नमः॥ च॥ अनामिकायां
 नमः॥ च॥ मध्यमायां नमः॥ च॥ रजनीयां नमः॥ च॥ अङ्गुष्ठायां न

म॥ च॥ कल नल यृषा र्थानम॥ ॥ वाँद दया यनम॥ श्री
निनमस्वाहा॥ वृँ निखाय वाषट्॥ च॥ कव वायद्वं॥ वाँ नरुगुया
यवषट्॥ च॥ मूमाय रुट्॥ ॥ निन्याह॥ ॥ यूजन॥ श्री श्री वाग
व्यर्थनम॥ श्री श्री लक्ष्मी नानायक्ष यनम॥ श्री श्री उमामहेश्वरा
यनम॥ श्री श्री लक्ष्मी॥ श्री श्री कर्त्तिकाय श्री द्वाँ रुट् स्वाहा॥ ३॥ वाँ द
दया यनम॥ म॥ नमस्ते युञ्ज॥ आवाहनादि॥ ॥ नमू मूडाँ दरीय
॥ मुनि॥ स्वप्नाय खलूनाम॥ य॥ शक्ति काय नत्यन॥ य॥ रुचु कृदव्या

खं खड्गनाथं नमामुते ॥ ॥ नमो यमुजाय ॥ हं मः वायव्यं ॥ अन्धसन्
 वं चनादि ॥ व० अस्माय रुद्र ॥ वलिविथ ॥ रुताय विविधकायाः
 विदिवान्कनिष्ठायाः गालगेलवा सिन्धुतनस्य नुलिवाहूया ॥ मना
 नयूविथ ॥ मूयका ॥ मरुतज सर्वगुप्ति मित्राय हं ॥ सवास्त्राय न
 रं आनि दीयाय यनिगृह्णतां ॥ आनित्रस्यामि ॥ वलिच्छाय ॥ ॥ हं मल
 खनराय ॥ दुकारं वायूवीजं गदय विवत्रूर्ध्वं वक्ष्यामि गदूर्ध्वं का
 लीवर्धनिकयूकं गदय विथ नमो वद्विबीजं सरुसु ॥ हं विन्दूलयार्क

सिनकमलदले. दोनधात्राएवर्न. दृष्टाकृत्तुनित्यं दहृति कूलम
लंमन्नुदुल्यं हियार्यं ॥ **वन** ॥ श्रीखलुचन्दनं दिव्यं गन्धं द्रव्यं मना-
हृते. आरुषितं ललाटाङ्गं. चन्दनं युनिट् शुभां ॥ **सिंधव** ॥ वीनं स्व
त्रामहावीनं. वीनं रसविह्वलं. ललाटाङ्गं कर्षणं दवी. सिंदूरानुह
मूलं मी ॥ **खान** ॥ नानावृक्षसूगन्धं. मालतीकसूमादयं. मादयं
मोक्षाय सिद्धिदं रुद्रं. पूज्यानां नमस्कृतं ॥ **हंस** ॥ स्याच्च कर्कशं यानं हि
धनं खानविद्य ॥ **आम** ॥ नंजवज्रसुमाय रुद्रं ॥ कन (अधनं) ॥ वांक

निष्ठाया नमः॥ वीजनामिकाय नमः॥ वूमक्षमाय नमः॥ वेंगर्ज
 नाय नमः॥ वीजगुहाय नमः॥ व० जूमाय रुट्॥ ॥ वांदुदयाः
 नमः॥ वीजवमस्वाहा॥ वूलिखाय वीषट्॥ वेंकवेचाय दू॥ वीं नः
 कृयाय वषट्॥ व० जूमाय रुट्॥ ॥ ~~दूजनी~~॥ लुं शांती न कलाः
 यनमः॥ ~~वाहउम~~॥ लुं शांति कलाय नमः॥ ~~दूवउम~~॥ लुं विशा
 कलाय नमः॥ ~~नारि~~॥ लुं निवृत्ति कलाय नमः॥ ~~क्रिइम~~॥ लुं युः
 निष्ठा कलाय नमः॥ ~~नारि~~॥ शिव न नम विनामन यूजा॥ ~~षउम~~

नयूजा॥ ॐ ॐ ॐ ॐ यत्र यान कना ॥ यश्च यमुमा कं कं नृश्वाहा ॥
ॐ यमुमा ॥ यविद्रुविश्वक
मायिधीमहि ॐ नन्नाजी वयुवा दयान ॥ अर्धयाग सधूकावस
मयनक ॥ अयादि ॥ वा ॥ ॐ यमुगृक्षा सिद्धवलि यहुया डयय
निर्ग ॥ अस्यायिस्वर्गसंयाकि तेषु विययचुम ॥ ॥ ॥ यमु
नय ॥ अर्धयाग नहाया वलि नदन कं चाय ॥ ॥ सभयका मावि
सकाय ॥ ॥ यमुलस कुमानो स ॥ दवज्जी चिद ॥ यकानकर

वन्ती मूर्ति जगति यू (ल्ल) स्व श्री वासव रू रणी गगनाय मा रुगवती नि
 (हा) स्व श्री दक्षि (हा) ह्ना नागमा कूज स्व श्री कूल गण वा नू ध्य दिग्नायिका
 श्री वा मां य हा मा मि वि स्व ऊ न नी द (र्ग) स्व श्री सिद्धि दा ॥ **स्वाहा सिद्धि दा ॥** न
 ज अभय चूर्च गरी य दं रुगवती चेतन्य नू या त्म का ह्ना न च्चा व दू ला न थ
 ह्नि रु चो व क्का म न वि रु यं ! रा स्व दे न व यं च कं न द नू न श्री या गि नी
 य श्र कं च न्दा की व म न वि ष द्क म म लं मां या रु नि त्यं कू जा ॥ ॥ **न्या स**
४ लि का य ॥ अमु न अग्नि कू लु कल हा थ रु ल वलि स च र को मा श्री वा

हिकन विस्कर्त्तुं ॥ ॥ यजमान स्वस्तिक मन्त्र ॥ ॥ नव चमादि
॥ ॥ ~~ललाट कान गाल~~ ॥ नैऋतं सुकलं गुरु मथ निःशुक्राय रु
टू ॥ ॥ बलि विषय ॥ रुगाय विविक्ष काना रुगदिव्या न विद्वग्म ॥ या
ताल गल वासिन्या स्तनश्च नु निवाहूया ॥ बलि समगा विषय ॥ सूय
का (॥ मरुतं ज सचरु स्ति मिना यरुं ॥ वाक्कात्य न प्रयाति दीयां यी
य निगृह्णती ॥ ॥ ~~द्रुम कन~~ ॥ ॥ निवर्ण कि कल सया लीखका
या व ~~अरिष्ट कवि~~ ॥ दुकारं वायु वीजं न दूय विव नूरी वदुयाः

विंगदूर्ध्व कालं वल्लभं युक्तं तद्व्यविद्यत्रयं वद्वि वीजं सं हर्म। ॐ
 न्दविन्दं लयानं गितकमलवर्जं क्षीत्रधामाश्रयवर्जं दृष्ट्वा कुरु ननु नि
 र्णयं कुरु नि कूलमत्रं भवूतु लं हि याय ॥ **॥ चन्दन ॥** श्री खलु चन्दनं
 दिव्यं गन्धाय सममनाह न। आरु विरं ललाटा (झ) चन्दनं यनि गृह्य
 नी ॥ चन्दनं लो विरं यूषं यविर्गं याय नाहनं आयदाह न नित्यं
 लक्ष्मीनाशु सुखयुतं ॥ **॥ सिध्द ॥** वीत्रल्वनी महावीन वीत्ररुस्म
 विरु विरं जिलाका कर्षणी दवी सिंदूरानुहा मूरुमं ॥ **॥ सग्वन ॥**

सिद्धार्थदधियावननचमकलं संयुक्तचन्द्रायमं। यायोद्यद्विनाय
नाशनकनीवींकार्यसिद्धिकनी यस्याः संरुवसंयदाजयकनीवा
र्थमहासिद्धिदं दीर्घायिल्विजकात्रलविजयनं नंदुस्यदायादुवं
॥ ॥ **भाहनि** ॥ उलाकभाहनीयां त्रियूकलदहनी रंजनीसर्वविः
द्विरुतयुताविमवारयसूखरुनही धंसिनीदाकिनीनां। नकाह
ताननाही निवसकलमूखा सर्वमङ्गल्ययूका सादवीभाहनीय
रिय० गनियूना सर्वसंयहिदायू ॥ **यंचसूयका** ॥ आदूकाय

ॐ कलुया स्वान धलुनीया कूमात्रीया नयानयाव स्वाननया ॥
 उल्लुलान्वज कल्लिकायत्रिगना श्रीसिद्धिलक्ष्मी ४ यना कथ्युनस्तुटिक
 न्दकन्दधवलानि ४ (४) यया (४) यया ॥ स सा नाल्वद ४ खयकद रुनीनि
 क्कम्यन सर्वदा पीयत्यश्च मूखाम्बुजा दधुजायनस्तिगायादुव ४ ॥
 यासा नकानि कूहनात्कि नराखनूया सामार्कवद्विजिय (४) दनम
 धर्मसंका विचनचिरुविषयाखाविली नरावाखा रावरावितयनी
 यममामिकाली ॥ ॥ नन्दस्येवधनासनस्यदधनी म (४) ललाटयः

श्री. शौ. क्री. कानि मनूषु. (न) विवलि न स्या त न्वती सर्वतः ॥ न सा सो विः
यूना द्वादित्युति विवा. श्री. (॥ ४ ॥ स दाह ४ स्तिता. च्छिद्या न ४ सह सा यद
क्रि. न यं आनिर्मया वा द्या यी ॥ नमस्तु दवद वलि. सिद्धिलक्ष्मी मः
हो जम. यत्यभिनामहा दवि. ना जलक्ष्मी नभा मुन ॥ ॥ वा अर्धा धन
दां दवी ४ भा द्वा दां द ४ खना सिनी. यत्यं निवां नम स्या मि. सिद्धिलक्ष्मी
जययदा ॥ ॥ धनयुतयं. स्वान विद्य ॥ ॥ मानका सा स्वान विद्य ॥ ॥
यजमान. कूरु द्या य ॥ यद्म युता वि नूरी. स्फुटिक मलि निरा. यश्च वकां. वि

नर्गं देला कं मा रुय नां तुज दहा क यू ना दि य व सु वृ नां गी । वा भ
 का याल लूलं च ट व न द म हा या हा मूर्धु व रु नां च छ ख द्वा इ ख भ
 रु य ष्टि सि हि नां सि द्वि ल क्ष्मी न मा मि ॥ ॥ ध रु नी न वा य ॥ शी लः
 क्षी य ति द रु या ग य न मा न न्दा न वि न्दा इ वा वा मा न त्त नि त्र म लि ४ ख लू
 म हा ल क्ष्मी म हा म झ ला । म ध्ये षा कि य थो ध ना रि गु व ना लं का ले सं व न्दि
 ता म न्दु य न्द क ला ध ना गु षा न सा शी का लि का या गि नी ॥ छं ठि ला च्च नी ॥
 न ज चू ल वि य ॥ य ज मा न आ दि न मा ल का र्त्त क ल षा वि य ॥ ॥ न्दु क

लभविद्य ॥ वाक् ॥ रगवन्नत्रला कोऽ^न। कुत्रुयवाधिय। साक्षात्सुहृमन-
उत्तं विदिवाकवनाचकं ॥ मानवाननूमास्ययातिनननमहुलं। अत्रि
नासिमयाकव. क्त्वा महुलपूवकं ॥ मयाकनस्ययहृस्ययथागक्षानूचि
नं। ॐ दमिदयकलर्गं नवराग्यवि। गयन॥ सोमानमनमनसो गृह्यतां
वसूधधिय। यूनस्कात्रविहीनाय नत्सर्वदम्यतीयशः ॥ ॥ अनियाता
अग्नि कलसं गय ॥ हानायाती डड कलसं ॥ नायूयना अध कलसं ॥
आलियना ह्यस्तिक कलसं ॥ आचानया अंगल कलसं ॥ अत्रिदियानं

वदिकलसं॥ जद्वदियागा वदिकलसं॥ ॥ न्वदियागा वदिकलसं॥
अथ वदियागा वदिकलसं॥ ॥ मालका उयविकलसं ज्ञाय॥ ॥ अ
धि॥ सूयका ॥ मरुतज सर्वनक्तिमीवायहं। सचाक्षयननं अनिदीया
यं यतिगृह्णां॥ ॥ यतिषा॥ यतिह्निना सिद्धवत्वं सूयनिष्ठा रुवननयं
॥ सानिष्ठां यतिगृह्णाति यजमानादि वृद्धेय। संभा सुद्विद्यकनित्यं संना ना
अनयेवच। यजमानसूक्तमायं सूयूययशुर्वीधर्वी। नक्षत्रं सर्वका न
मू. दक्षिणरेववनभा मुन॥ सूयनिष्ठा वनदा रुवनु॥ ॥ दक्षकनकनी॥

यूह चन्द्रनिरुनिरुं मुचं दयर्षी नकु दयह ॥ आत्मविन्दधनयस्य संय
दायजयायच ॥ ॥ कुमारविमर्जन ॥ ॥ साक्षिधाय ॥ धनामालका
वर्लिं कुमारिधायमानका ॥ ॥ समयकायरा आदिज (धर) ॥ ॥
वैरया कायात्र यागु सतय ॥ समय यागुल वक्राय ॥ यजमानः
आदिननकासं विय ॥ सामारुया धरयका ॥ आगह कुमारविमर्जनय
मान दयर्षीतय ॥ नयर्षी ॥ नंज यीत ४ धनासनस्का रुवरुय रुन
(६) रुन वामनु मूर्ति ध्वष्टि चक्षुसनस्का गहगुनू वदू का लाक

याला ४ रुहीन्या ४ नकायका ४ सुगीर्था ४ विहगदसकलामातन ४ क
 रुयाला यागिन्या यागयूका ४ कलजलखचला ४ यानभनल्यिवनु
 ॥ यिवनु दवगा ४ सर्वा ४ समूडा ४ संगलधिया यागिन्या ४ कुरुयाला
 नवदरुववह्निना ॥ वाक् ॥ नमः श्रीनाथाय ॥ नमः श्रीसिद्धिनाथ
 य ॥ नमः श्रीकूजनाथाय नमानमः ॥ ॥ **कुरुया कायावयागः**
समान समयविषयविरुध्य ॥ ॥ नयनि ॥ अष्टाविंशतिकर्माः
क्षमष्टाविंशतिमलुल ॥ वीचचकहिर्गावद ॥ अष्टाष्टकसमन्विता ॥

नमस्तु चक्रवर्त्ये च नमस्तु सप्तनदायकं । नमस्तु रेवतव्यूयाय न
मस्तु रेवतायकं ॥ अष्टाष्टकं दुष्टागिन्या वट्टकानीनं प्रेवच । रे
वर्वचल्लु मंचक भकाकार्जन नमाम्यहं ॥ ॥ कृष्णया कायावयाः
रसगाने समयविय विराय ॥ ॥ नयना ॥ अविना ॥ अष्टव
दह मजला मलभवच ॥ महावर्ल वज्र दह । नाजयी भकच
कं ॥ अष्टना ॥ अष्टवन्नित्य मायूक्षी कानि वचुलं । महायूषिरेव
न्नित्यं लक्ष्मी सक्तनिदायकं ॥ नमस्तु नारायण सर्वस्य देवदेवननि

मिति। यत्रामृतनसां दिवां। यथा तां रुतरेषां॥ नन्दु कूलथा
 गिन्ना नन्दु कूलयूरीका॥ नन्दु यी कूला वा यो यत्रान्यत्र न
 भामृत॥ ॥ रा॥ समयज (पेछ) ॥ रा॥ अयाय॥ गतकावज
 अन्ति कायाय॥ कूरया कायावया सुना न समय विराय २
 विरय॥ ॥ नयैलयाय॥ नंजयन्ति देवा रुतया दयै कर्जं यम
 नवा मा मृतमा कूदायकं॥ अन्नक सिद्धान्तमनियवाधकं नमा
 मिवाष्टाष्टकया गिनी गरी॥ या गिनी चक्रमध्वस्तं माहमलुल व

[illegible]

वीरू बहु कायिममायवस्म यस्यायुत्राध्वत्रहयं कभवेदेव॥
 नन्दनुसाधकाऽसिद्धा नन्दनुकूलयागिनऽनन्दनुसाधकाः
 चायायिचान्यकूलदीक्षिताऽदहीनऽसूखिनऽसनु सूखानि
 सनुदहवन् यसादनुसदागच्च वनर्हजीवक्षत्रर्ह॥ **यनधून**
काव॥ ॥ **यनाडुच्छिष्टसुसुखिदवीयूजनयाय॥** उच्छिष्ट
 दायाववातासनय॥ आगनवा दवयाद्ववन वा दयुत्रि वाता
 सनय दवन॥ **यूजनसुसुखि॥** अखलु महुलाकात्रमित्यादि॥